गांधी स्मारक निधि का मासिक मुखपत्र

संस्थाकुल

अप्रैल, 2023 वर्ष – 54 अंक – 1

वार्षिक सहयोग राशि : रु. 20.00
एक प्रति : रु. 2.00
कुल पृष्ठ : 12

दस्तावेज :

हिन्दू–मुस्लिम एकता और स्वराज्य

महात्मा गांधी

प्रार्थना सभा में भाषण,
नई दिल्ली,
6 अप्रैल, 1946

27 साल पहले ठीक आज ही के दिन रौलट–अधिनियम के खिलाफ सत्याग्रह का ऐलान किया गया था। उन दिनों स्वामी श्रद्धानन्दजी जिन्दा थे। उसके बाद के हफ़्ते में एक नया ही इतिहास बना। समूचा हिन्दुस्तान इस छोर से उस छोर तक जाग उठा। पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। किसी ने इसके लिए कोशिश नहीं की थी। खुद मुझे कोई कल्पना न थी कि इसका इतना चमत्कारी परिणाम होगा। मैंने अनुभव किया है कि इस चमत्कार में ईश्वर का हाथ था।

यह वह समय था जबकि हिन्दू–मुसलमान अपने आपसी झगड़ों को भूल गये थे। सगे भाई की तरह अलीबन्धुओं के साथ मैं सारे देश में घूमा करता था। हम एक आवाज से बोलते थे और लोगों को हिन्दू–मुस्लिम एकता का और स्वराज्य का सन्देश सुनाते थे। हमने तय किया था कि अब से आगे जो कुछ मांगना होगा वह ब्रिटिश सल्तनत से नहीं, भगवान से मांगेंगे। सत्याग्रह का जन्म दक्षिण अफ्रीका में हुआ था। हिन्दुस्तान में उसका श्रीगणेश इस तरह 6 अप्रैल के दिन हुआ। 13 अप्रैल को जलियांवाला बाग में निहत्थे लोगों पर गोली चलाई गई। इसलिए लोगों ने 6 और 13 अप्रैल के दिन, यानी राष्ट्रीय सप्ताह के पहले और आखिरी दिन, उपवास किया और प्रार्थना की। अली भाइयों ने भी इसका स्वागत किया। उन्होंने यह अनुभव किया कि वे एक ही ईश्वर की सन्तान हैं और इस भारत भूमि में हमको एक साथ जीना और एक साथ मरना है। लोग हजारों की तादाद में मन्दिरों, मसजिदों और गिरजाघरों में इकट्ठा हुए और उन्होंने वहां मिलकर प्रार्थना की। अन्त में हिन्दू और मुसलमानों के एक विशाल जन–समुदाय को स्वामी श्रद्धानन्दजी ने जामा मसजिद में जाकर सम्बोधित किया।

हिन्दुस्तान के इतिहास में वह एक महान दिन माना जायेगा। उसे हम भूल नहीं सकते।

लेकिन आज वह हालत नहीं रही। न जाने क्या भूल हुई है। हिन्दू और मुसलमानों के दिल खट्टे हो गये हैं। साम्प्रदायिक द्वेष की बातों से वातावरण दूषित हो गया है। कुछ मुसलमान तो यह तक मानने लगे हैं कि उनका अपना एक अलग राष्ट्र है। इसके कारणों की चर्चा करने का यह समय नहीं। मैं स्वीकार करता हूं कि मैं इससे चकित हो गया हूं।

उस दिन से हम प्रार्थना की शुरुआत भजन से करते हैं जैसा कि आज हुआ। प्रार्थना में श्रद्धा रखने वाले एक–दूसरे का गला नहीं काटा करते। लेकिन अमृतसर में लोग अपना आपा खो बैठे। उनकी भूल के लिए मैंने उपवास किया। मनुष्य भूलों का पुतला है। भूल कबूल करके वह आगे बढ़ता है। छिपाकर पशु बनता है। मनुष्य न तो ईश्वर है, और न पशु। वह तो ईश्वर का बन्दा है। पश्चाताप और आत्मशुद्धि की मदद से वह अपने किये हुए पापों और गलतियों को धो सकता है।

प्रार्थना कार्य के रूप में व्यक्त होनी चाहिए। इस पुण्य

सप्ताह में हम क्या–क्या कर सकते हैं ? हम अपने दिल से दुश्मनी और द्वेष को निकाल डालें और सब भाई–भाई बनकर रहें। अहिंसात्मक स्वराज्य की प्राप्ति के लिए चरखा चलायें। मुझे सन् 1919 की याद आती है। उन दिनों घर–घर में चरखे की गूंज सुनाई पड़ती थी। एक बार जब मैं पंजाब गया था, तो मेरे सामने सूत का एक पहाड़ रच दिया गया था। वैसा दृश्य फिर अब की बार मदुरा में देखने को मिला था। इस बीच और कहीं दिखाई नहीं पड़ा। लेकिन आज पंजाब की बहनें क्या कर रही हैं ? आत्म–निरीक्षण के इस सप्ताह में सबको यह सवाल अपने–आपसे पूछना चाहिए। अगर हिन्दुस्तान के भाई–बहन यज्ञ की भावना से कातने लगें और ईश्वर का नाम लें तो स्वराज्य तो मिल ही जायेगा, और मिलने के बाद भी उसे कायम रखने की ताकत हममें आयेगी।

हाल ही में जब मैं आजाद हिन्द फौज वालों से लाल किले में मिला था, तो यह चर्चा छिड़ी कि अपनी रिहाई के बाद वे क्या करना चाहते हैं। उन्होंने मुझसे कहा कि वे कांग्रेस के झंडे के नीचे अहिंसा के हथियार से लड़ने वाले सच्चे सिपाही बनना चाहते हैं। मैंने कहा कि सच्चा सिपाही तो वह है, जो भूखों के लिए अनाज पैदा करता है, और नंगों के लिए सूत कातता है। कांग्रेस ने अहिंसा के जरिये आजादी हासिल करने का ऐलान किया है। लेकिन बाहर के हमलों से देश की आजादी की रक्षा भी वह अहिंसा से करेगी या नहीं, इसका उसने अभी कोई फैसला नहीं किया है। मुझे तो यह बात साफ दीखती है कि अगर आजादी सबके लिए है, लूलों, लंगड़ों और कमजोरों वगैरा के लिए भी है, तो उसकी रक्षा या हिफाजत भी सबको करनी होगी। लेकिन मेरी देहाती समझ में यह बात नहीं आती कि गोला–बारूद और शस्त्रास्त्रों पर आधार रखकर यह सब कैसे हो सकेगा ? इसीलिए तो मैं अहिंसा पर डटा हुआ हूं। आत्मा की शक्ति का सहारा लेता हूं। शरीर की कमजोरी इसमें कोई रुकावट नहीं डाल सकती। अहिंसा के हथियार से एक स्त्री या बालक भी हर किसी हथियारधारी दानव का सामना कर सकता है।

अहिंसात्मक समाज का स्वरूप 18 प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रम में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। चरखा उसका मध्य बिन्दु है।

(सम्पूर्ण गांधी वांगमय : खण्ड– 83, पृष्ठ 425–427)

सम्पत्ति का व्यवहार शास्त्र

आचार्य विनोबा

कबीर ने लोगों से कहा कि मैं आपको वैराग्य नहीं सिखा रहा हूं, बल्कि व्यवहार की शिक्षा दे रहा हूं। यह कहकर उन्होंने कहा – **पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम। दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।** नाव में पानी बढ़ जाने से खतरा है, उसी तरह घर में संपत्ति बढ़ जाने से खतरा है। कितनी सुंदर उपमा है। नाव के लिए पानी की जरूरत है। परंतु पानी नाव के नीचे होना चाहिए, नाव में नहीं। उसी तरह संपत्ति की भी आवश्यकता है, परंतु घर में नहीं, समाज में। घर में संपत्ति बढ़ जाने से वही खतरा पैदा होता है और इसीलिए उसको भी दोनों हाथों से बाहर फेंक देना चाहिए। तभी नाव बचती है। कबीर ने कहा, यही व्यवहार–शास्त्र है। जैसे फुटबॉल का खेल होता है, उसमें मेरे पास गेंद आयी और मैंने उसको अपने पास ही रखा, तो खेल खतम हो जाता है, इसलिए मेरे पास गेंद आते ही मेरा कर्त्तव्य हो जाता है कि फौरन उसे लात मारकर दूसरे के पास फेंक देना। फिर वह भी उसे तीसरे के पास फेंकेगा। इस तरह खेल चलता रहता है।

इसी तरह हमारे पास संपत्ति आयी कि हमें उसे लात मारकर दूसरे के पास फेंक देनी होगी। फिर वह भी उसको तीसरे के पास फेंकेगा। और इससे समाज में जीवन का खेल अत्यंत सुखमय होगा। यह व्यावहारिक बुद्धि है। संन्यास नहीं है। यह तो एक धर्म–कार्य है। जो घर में संपत्ति रखता है, वह धर्म–हीन है। इसलिए दोनों हाथों से संपत्ति लुटा देना ही अक्ल का काम है, यह कोई कठिन बात नहीं है। दोगे दो हाथों से, पर पाओगे अनंत हाथों से; क्योंकि आपको तो भगवान ने दो ही हाथ दिये हैं, लेकिन समाज के अनंत हाथ हैं। अगर आप दो हाथों से नहीं दोगे, तो कुछ भी नहीं पाओगे।

संस्कृत में पैसे को द्रव्य कहते हैं। द्रव्य यानी बहने वाला। वह अगर स्थिर रहा तो संचित पानी के जैसे उसमें से दुर्गंध आयेगी।

(विनोबा साहित्य : खण्ड–9, पृष्ठ–445)

सर्वोदय सम्मेलन में भाग ले रहे मित्रों से

सम्माननीय एवं प्रिय मित्रो,

सर्वोदय समाज एवं **सर्व सेवा संघ** की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने पर आयोजित 48वें सर्वोदय समाज–सम्मेलन (14,15,16 मार्च, 2023) में भागीदारी कर रहे आप सब मित्रों को आपके एक हमराही की ओर से सादर नमस्कार एवं अभिनंदन! सम्मेलन में भागीदारी तो मुझे भी करनी थी, सेवाग्राम आने और वापस लौटने का रेल–आरक्षण भी करा लिया था, लेकिन शायद ईश्वर या नियति को मंजूर नहीं था। 26 फरवरी की शाम को अजमेर में सम्पन्न हुए गांधीजन सम्मेलन के बाद अचानक स्वास्थ्य इतना नाजुक हो गया कि रात भर अस्पताल के गहन चिकित्सा केन्द्र में रहना पड़ा। ईश्वर कृपा और आप सबके स्नेहाशीष से स्थिति संभल गयी और 28 फरवरी की सुबह दिल्ली वापस आ गया। लेकिन अब करीब दो महीने तक डॉक्टरी निर्देशानुसार प्रवास प्रतिबन्धित है। अतः सेवाग्राम–प्रवास स्थगित करना पड़ा है और आप सबसे प्रत्यक्ष मुलाकात एवं विचार–विमर्श से वंचित होना पड़ रहा है, यद्यपि मन–भावना से तो आप सबके बीच ही रहूंगा इस अवधि में।

● **सर्वोदय समाज** एवं **सर्व सेवा संघ** के अहिंसक क्रान्ति के प्रयोगों एवं प्रवृत्तियों से मैं सन् 1956 में ही जुड़ गया था किशोर वय से। जैसे–जैसे समय गुजरता गया, प्रयोगों के स्वरूप और स्थितियों में परिवर्तन होते गये, लेकिन एक बुनियादी विचार मन में सुदृढ़ होता गया कि पूज्य बापू की शहादत के बाद उनके सपनों का भारत बनाने यानी गांवों के पुनर्निर्माण की बुनियाद पर अहिंसक समाज रचना के लिए पूज्य विनोबा के शब्दों में **'हिंसाशक्ति की विरोधी, दण्डशक्ति से भिन्न अहिंसक लोकशक्ति'** का निर्माण अनिवार्य है, जिसे उन्होंने तीसरी शक्ति कहा था। **सर्वोदय समाज** एवं **सर्व सेवा संघ** की स्थापना के संदर्भ में सम्पन्न हुई सेवाग्राम संगोष्ठी (1948) की पूरी रपट को एक से अधिक बार पढ़ने पर मेरा दृढ़ मत बना कि **सर्वोदय समाज** एवं **सर्व सेवा संघ** की सार्थकता इसी लक्ष्य को पूरा करने में निहित है और यथासम्भव, अपनी अल्प क्षमता के साथ **सर्व सेवा संघ** एवं **सर्वोदय समाज** की जब और जो भी जिम्मेवारियां मुझे दी गयीं, इसी भाव एवं निष्ठा के साथ मैंने पूरी करने की कोशिश की। अपने अतीत के संदर्भ को याद करते हुए मैं आप सबसे निवेदन करना चाहता हूं कि कृपया **सर्वोदय समाज** एवं **सर्व सेवा संघ** के इन बुनियादी उद्देश्यों को सतत् ध्यान में रखें।

● राजशाही, सामंतशाही, साम्राज्यशाही की गुलामी से मुक्त हुए भारत ने बालिग मताधिकार पर आधारित संसदीय लोकतंत्र की स्थापना का जो संकल्प लिया, वह राजनीति के क्षेत्र में एक आध्यात्मिक प्रयोग का संकल्प था। स्वतंत्रता–संघर्ष के दौरान 'स्वराज्य' की गांधी–विचार प्रेरित अवधारणा के साथ परिपक्व हुए देश के राष्ट्रीय नेतृत्व में से कुछ ने विभाजन की पीड़ा से कराहते देश और समाज को संभालने की जिम्मेदारी ली, तो कुछ ने लोकतंत्र की बुनियाद को सुदृढ़ करने की दृष्टि से, समाज में रहकर, सत्ता प्राप्ति की स्पर्द्धा में न पड़ते हुए, 'लोकतंत्र' के 'लोक' को जागरूक, संगठित और 'तंत्र–नियंत्रक' बनाने की लोकसाधना शुरू की। पूज्य विनोबा, लोकनायक जयप्रकाश नारायण आदि, और उनसे अनुप्रेरित देश के हजारों कार्यकर्त्ताओं ने इस अभियान में स्वयं को समर्पित किया। भूदान–ग्रामदान, शान्तिसेना, खादी–ग्रामोद्योग आदि रचनात्मक प्रवृत्तियां, सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन, गांव–गांव जनता सरकार आदि के प्रयोग, लोकतंत्र को सही पटरी पर लाने और अंततः 'लोक' को ही 'तंत्र' का नियामक बनाने की दृष्टि से शुरू किये गये। ऐसा नहीं कि ये सारे प्रयोग विफल रहे, बल्कि गहरायी से इनका विश्लेषण और समीक्षा की जाय, तो इन प्रयोगों ने अहिंसक लोकशक्ति के निर्माण की दृष्टि से अपार सम्भावनाएं प्रकट कीं।

● लेकिन देश और समाज की वर्तमान स्थिति चिंतनीय है। 'लोकतंत्र' को फासीवादी व्यवस्था में तब्दील करने की कोशिशें हो रही हैं, 'लोक' को 'तंत्र' का नियामक नहीं गुलाम और याचक बनाया जा रहा है। ऐसी स्थिति में हम अहिंसक समाज रचना के लिए संकल्पित 'लोक सेवकों' को क्या करना है, यह हमारा प्रमुख विचारणीय मुद्दा होना चाहिए। महात्मा गांधी ने यह स्पष्ट किया था कि 'हिन्द स्वराज्य' की अवधारणा पर आधारित➪

सर्वोदय समाज
48वें सेवाग्राम–सम्मेलन का निवेदन

सर्वोदय समाज और सर्व सेवा संघ ने अपनी 75 वर्षों की लंबी यात्रा में लोकतंत्र पर आए तमाम संकट देखे हैं और उनका सामना भी किया है। इन संकटों में 'आपातकाल' प्रमुख है। उस दौरान हमारा संघर्ष भारत में लोकतंत्र की बहाली में महत्वपूर्ण सबित हुआ था। परंतु वर्तमान में लोकतंत्र पर जो संकट आया दिख रहा है, वह अभूतपूर्व है। गौरतलब है, कि यह केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। यह वैश्विक संकट बन गया है। भारत के अहिंसक समाज को आज हिंसक बनाने की कोशिश की जा रही है। सत्य की जगह असत्य को स्थापित करने को जैसे राजकीय मान्यता मिल रही है। भारतीय लोकतंत्र में चुनाव को अर्थहीन बनाया जा रहा है। चुनी हुई सरकारें एक झटके में बदल दी जाती हैं और जनता अवाक् खड़ी रह जाती है। महात्मा गांधी ने कहा था, "सच्ची लोकसत्ता या जनता का स्वराज कभी असत्यमय अथवा हिंसक साधनों से नहीं आ सकता। कारण स्पष्ट और सीधा है, यदि असत्यमय और हिंसक उपायों का प्रयोग किया जाए, तो उनका स्वाभाविक परिणाम यह होगा कि सारा विरोध या तो विरोधियों को दबाकर या उनका नाश करके खत्म कर दिया जाएगा।"

राजनीतिक तौर पर हम लोग एक ऐसे समय में जी रहे हैं, जिसमें आजादी के बाद पहली बार भारतीय संविधान, भारत का संघवाद, भारत का बहुलतावादी चरित्र, सांप्रदायिक सौहार्द्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक साथ संकट में नजर आ रहे हैं। भारत के सांवैधानिक प्रावधानों की मनमाफिक विवेचना की जा रही है। इतना ही नहीं,

➪राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में प्राथमिक एवं आवश्यक बात यह है कि हमारा लोकतंत्र सही पटरी पर कायम रहे।

● हम राज्य–सत्ता की स्पर्द्धा में नहीं पड़ेंगे, यह हमारी निष्ठा है, लेकिन साथ ही अहिंसक समाज–रचना के लिए लोकशक्ति को जागृत, संगठित करना और लोकतंत्र को तानाशाही–फासीवादी तंत्र में बदलने की कोशिशों को रोकना भी हमारा कर्त्तव्य है।

● निःसंदेह हमारी बुनियादी निष्ठा सत्य–अहिंसा के प्रति है, अतः हमारे जीवन में, संगठन में, निर्णय प्रक्रिया में इन मूल्यों की प्राथमिकता होनी चाहिए, इतना ही नहीं, बल्कि वह दिखायी भी देनी चाहिए। इसलिए राजनीतिक मुद्दों पर हमारा विचार–विमर्श, चिंतन एवं निर्णय प्रक्रिया राजनीतिक दलों की 'प्रतिकृति' नहीं हो सकती। आज राजसत्ता के बल पर जो पाशविक शक्तियां 'राज्य' एवं 'समाज' में हावी होती दिख रही हैं, उनका मुकाबिला हमें नैतिक शक्ति से करना है, इसका हमें सतत् ध्यान रखना होगा।

हमारे पास गांधी–विनोबा–जे.पी. जैसे तपस्वियों–साधकों की सुदृढ़–समृद्ध विरासत है। उस विरासत और अपनी विचार एवं कर्मसाधना के साथ हम आगे बढ़ें, यह वर्तमान समय की पुकार है। महात्मा गांधी ने कभी एक प्रश्न के उत्तर में कहा था :

"मेरे चले जाने के बाद कोई भी एक व्यक्ति मेरा पूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं कर सकेगा। परन्तु मेरा थोड़ा–थोड़ा अंश तुममें से अनेकों में रहेगा। यदि तुममें से प्रत्येक व्यक्ति ध्येय को प्रथम और स्वयं को अंतिम स्थान देगा, तो मेरे रिक्त स्थान की बहुत–कुछ पूर्ति हो जायेगी।" यह बापू का निर्देश हमें सतत् याद रखना है – **ध्येय प्रथम, स्वयं अंतिम!**

अंत में मैं क्षमा प्रार्थी हूं कि आप लोगों के साथ प्रत्यक्ष संवाद एवं निर्णय–प्रक्रिया में भागीदारी नहीं कर पा रहा हूं। लेकिन खुले मन से विचार–मंथन के बाद जो निर्णय आप सर्व सम्मत्ति से लेंगे आगे बढ़ने के लिए, उसमें मैं अंतिम सांस तक सक्रिय सहयोगी रहूंगा।

सबको सादर–सप्रेम जय जगत्,

दिनांक : 10.03.2023

आपका,
रामचन्द्र राही
अध्यक्ष,
गांधी स्मारक निधि (केन्द्रीय)

प्राकृतिक संसाधनों और जनसामान्य की संपत्ति की चोरी को जैसे वैधता मिलती जा रही है। राष्ट्र में संपत्ति का संग्रहण कुछ गिने–चुने लोगों के पास होता जा रहा है। इसके प्रमाण हम रोज देख रहे हैं। भारत में बढ़ती आर्थिक असमानता इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। नई आर्थिक नीतियों की वजह से भारत में बेरोजगारी पिछली आधी शताब्दी से सर्वाधिक स्तर पर पहुंच चुकी है। युवा लगातार हतोत्साहित हो रहे हैं। गांधीजी तो मानते थे कि बिना रोजगार कोई भी व्यक्ति गरिमामय जीवन नहीं जी सकता। आज करोड़ों–करोड़ लोग नैराश्य में डूबते जा रहे हैं। युवा आत्महत्या कर रहे हैं। भर्ती में होने वाले घोटालों के चलते उन्हें रोजगार नहीं मिल पा रहा है। सर्वाधिक रोजगार देनेवाले छोटे उद्योग, जिनमें ग्रामोद्योग भी शामिल है, अब अंतिम सास ले रहे हैं।

इनके चलते भारत में धर्मांधता का भयावह दौर शुरू हो गया है। अनेक ऐसे लोग, जो स्वयं को धर्म का प्रवर्तक कहते थे, आज हत्या व बलात्कार के मामलों में सजायाफ्ता होकर जेल में हैं। परंतु दुखद यह है कि जनता के एक वर्ग का मोह उनसे नहीं छूट रहा है। ऐसे में हम गांधीजनों के लिए पूजा–धर्म को लेकर बापू के विचारों को प्रसारित व प्रचारित करना अनिवार्य हो गया है। आज धर्म की आड़ में समाज के तमाम लोगों, वर्गों को भयभीत किया जा रहा है। इससे समाज में विभाजन बढ़ता जा रहा है। हमारे संविधान की मंशा के विपरीत आचरण हो रहा है। हमें याद रखना होगा कि बापू ने अपने रचनात्मक कार्यों में पहला स्थान "सर्वधर्म समभाव" को ही दिया था। अल्पसंख्यक आज भयभीत हैं और ऐसा किसी एक वर्ग के ही साथ नहीं है।

वहीं भारतीय समाज के प्रमुख अंग अनुसूचित जाति और जनजातियों के मध्य भी लगातार असुरक्षा बढ़ रही है। नई आर्थिक नीतियों और अंधाधुंध निजीकरण की वजह से उनके लिए आरक्षित नौकरियां कमोवेश खत्म हो गई हैं। इन वर्गों में भी आक्रामकता और हताशा बढ़ती जा रही है। हमें इस विषय पर अनिवार्यतः गंभीर मनन करना होगा।

भारत में महिलाओं के खिलाफ हो रहे अपराधों में व्याप्त बर्बरता और नृशंसता सभी सीमाएं लांघ रही हैं। उनमें व्याप्त असुरक्षा हमारे लिए शर्म का विषय है। मनोरंजन के भ्रष्ट माध्यमों और सोशल मीडिया में बढ़ती अश्लीलता ने इसे और हवा दी है।

गौरतलब है भारत में लोकतांत्रिक, संवैधानिक संस्थाओं का वास्तविक स्वरूप अब खतरे में है। उनका मनचाहा और मनमाना दुरुपयोग हो रहा है। इनका एक पक्षीय होना भारतीय लोकतंत्र के लिए विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। भारत को हिंदूराष्ट्र बनाने को लेकर प्रयास चल रहे हैं। गांधी, विनोबा, नेहरू, जयप्रकाश, मौलाना आजाद जैसे मनीषियों और भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा से बने और विकसित हुए भारत नामक विचार को नष्ट किए जाने के प्रयास चल रहे हैं। देश में फासीवादी व्यवस्था और फासीवाद पनप रहे हैं। इससे हमें देश को बचाना होगा। देश में बढ़ती बेरोजगारी के बरक्स दो–चार उद्योगपतियों का आर्थिक आकाश छू लेना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। हम इस प्रवृत्ति की निंदा करते हैं।

हम सब जानते हैं कि भारत कृषि पर निर्भर देश है। गांधीजी ने तो ग्राम स्वराज का न केवल नारा दिया था, बल्कि उसे पाने का तरीका भी समझाया था। आज भारत में कृषि और कृषक दोनों संकट में हैं। यदि ये संकट में रहते हैं तो भारत भी संकट से बाहर नहीं आ सकता। कृषि और गांव बचेंगे तो ही भारत बचेगा। किसान आंदोलन के दौरान बहुत सी विषमताएं उभरकर सामने आई थीं।

हम गांधीजनों को "खादी" के महत्व को पुनः स्थापित करना होगा। विनोबा ने खादी को बापू का सर्वश्रेष्ठ आविष्कार कहा है। खादी एक परिपूर्ण जीवनशैली है, यह महज एक वस्त्र भर नहीं है। गांधी–विचार से ओतप्रोत अर्थव्यवस्था, जिसे स्व. जे. सी. कुमारप्पा ने बहुत सुंदरता से व्याख्यायित किया है, जिसमें आशा की एकमात्र किरण नजर आ रही है, हमें उसको प्रचारित करना होगा।

आज बापू के विचारों को अप्रासंगिक बनाने के प्रयास जोर–शोर से चल रहे हैं। मुंह पर गांधी का नाम भले ही लिया जा रहा हो, लेकिन वास्तविकता इसके उलट है। इससे पहले सर्वोदय समाज और भारतीय समाज के समक्ष कभी भी इतनी विकट और विषम परिस्थितियां नहीं थीं। आज मानवता और मानवीय मूल्य दोनों ही गंभीर संकट के दौर से गुजर रहे हैं। मानवाधिकारों पर खतरा मंडरा रहा है। ⇨

गांधी–जन सम्मेलन का

अजमेर घोषणा–पत्र : 2023

राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी अजमेर में 25–26 फरवरी, 2023 के दौरान आयोजित राष्ट्रीय गांधी–जन सम्मेलन देश–दुनिया की लगातार बिगड़ती स्थिति पर गहरी चिंता प्रकट करता है और भरसक उसे बदलने का अपना संकल्प जाहिर करता है।

यह सम्मेलन मानता है कि देश–दुनिया की आज की दुरावस्था, गलत नेतृत्व द्वारा समाज को गलत दिशा में जाने का परिणाम है। यह गिरावट मनुष्य–कृत है। जो मनुष्य–कृत है उसे मनुष्यों के सामूहिक प्रयास से सुधारा या बदला जा सकता है, महात्मा गंधी ने अपने जीवन व कार्यों से हमें यही बतलाया व सिखलाया है। हम गांधी–जन इसके प्रति अपनी प्रतिबद्धता घोषित करते हैं।

हम मानते हैं कि देश में सांप्रदायिकता का जैसा माहौल योजनापूर्वक बनाया गया है, वह आत्मघाती है। यह देश को स्वतंत्रता आंदोलन की भावना से एकदम विपरीत दिशा में ले जाने की कोशिश है। सांप्रदायिकता धर्म के दुरुपयोग का व अधर्म को फैलाने का दूसरा नाम है। युवा–मनों को संकीर्ण उन्माद से भरने से ज्यादा गर्हित अधर्म दूसरा क्या हो सकता है ? ऐसा करने वालों ने ही देश का विभाजन भी करवाया था तथा महात्मा गांधी की हत्या भी करवाई थी।

उन ताकतों ने तब देश तोड़ा था, आज वे देश का मनोबल तोड़ने में लगी हैं। आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर देश लगातार इस तरह कमजोर किया जा रहा है ताकि असहमति की आवाज उठाने वाला कहीं कोई न बचे। संवैधानिक संस्थाएं हर तरह से कमजोर व सत्त्वहीन बनायी जा रही हैं। उन संस्थानों में आज ऐसे लोगों की भीड़ है जो लोकतांत्रिक शील को मजबूत करने

⇨ हमें याद रखना होगा कि सर्वोदय समाज की स्थापना के समय जो विराट व्यक्तित्व हमारे साथ थे, वैसे अब नहीं हैं। अतएव हमें उनसे प्रेरणा लेकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। बापू के एकादश व्रत प्रकाश स्तंभ की तरह हमारे साथ हैं। बापू के एकादश व्रत वैश्विक शांति व समृद्धि के लिए भी रामबाण औषधि हैं। विश्व के सबसे हिंसक समय में भी गांधी अहिंसा व सत्य से डिगे नहीं। आज वैश्विक परिदृश्य हिंसा, लूट और अनैतिकता से अटा पड़ा है। लूट पर आधारित, गांधी के शब्दानुसार, शैतानी सभ्यता अब छटपटा रही है। यूक्रेन–रूस युद्ध नया वैश्विक संकट है। बापू कभी चुप नहीं बैठते। इसी सेवाग्राम से उन्होंने हिटलर को दो पत्र लिखे थे, जिसे ब्रिटिश सरकार ने उन तक पहुंचने नहीं दिया था। आज भारत की भूमिका नगण्य होती जा रही है। जबकि सारी दुनिया गांधी–विचार को ही विकल्प मान रही है।

यह 48वां सर्वोदय समाज सम्मेलन संकल्पित है कि वह मनुष्यता और भारतीय लोकतंत्र को बचाने के हर संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाएगा और हमेशा की तरह धर्मनिरपेक्ष व लोकतंत्र में विश्वास रखने वालों का साथ देता रहेगा। निकट भविष्य में हम इसमें अपनी सक्रिय भूमिका को स्पष्ट करेंगे। हमारा मानना है कि सनातन मूल्य कभी नष्ट नहीं होते, परंतु उन्हें प्रसारित तो करते ही रहना पड़ता है। यह सम्मेलन इस बात को लेकर प्रतिबद्ध है। यह लोकतंत्र, संविधान व धर्मनिरपेक्षता को बचाने के प्रत्येक संघर्ष में सहभागी बनने और पहल करने का संकल्प लेता है।

अंत में हम बापू के इस कथन को दोहराते हैं कि "मैं यह सिद्ध कर दिखाने की आशा रखता हूं कि सच्चा स्वराज थोड़े लोगों के द्वारा सत्ता प्राप्त करने से नहीं, बल्कि सब लोगों द्वारा सत्ता के दुरुपयोग का प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करने से हासिल किया जा सकता है।" दूसरे शब्दों में, स्वराज्य जनता में इस बात का ज्ञान पैदा करके प्राप्त किया जा सकता है कि सत्ता का नियमन और नियंत्रण करने की क्षमता उसमें है। जय जगत्!

(सेवाग्राम (वर्धा, महाराष्ट्र) में दिनांक 14,15,16 मार्च, 2023 को सम्पन्न हुए 48वें सर्वोदय समाज सम्मेलन में प्रस्तुत और सर्व सम्मति से स्वीकृत ।)

के बजाए निजी लाभ के आधार पर काम करते व फैसले लेते हैं। जब न्यायपालिका भी इसी राह पर चलने लगे तो राष्ट्र की लोकतांत्रिक संभावनाओं को समाप्त करना आसान हो जाता है।

देश गहरे आर्थिक संकट में है। सत्ता व पूंजी का ऐसा गठबंधन पिछले सालों में हुआ है कि अब सारे अवसर व सारे संसाधन कुछ कॉरपोरेट की मुट्ठी में सिमट गए हैं। वर्तमान सत्ता उनकी सफरमैना से अधिक कोई हैसियत नहीं रखती है। सामाजिक न्याय व आर्थिक समता आज देश के एजेंडे में है ही नहीं। बेरोजगारी चरम पर है। हिंसा की ताकतें खुले आम अपना खेल खेल रही हैं। प्रधानमंत्री 'सबका साथ--सबका विकास' का भाव लेकर चल रहे जिस भारत की रात–दिन चर्चा करते हैं, वह भारत हमें तो कहीं दिखलाई नहीं पड़ता है। लगता है, वे हमारे इस भारत के नहीं, किसी दूसरे भारत के प्रधानमंत्री हैं।

इस तरह लड़ाई अब खुले में आ गई है। लोकतंत्र का एक मतलब यह भी है कि जब–जब, जो भी सत्ता सत्य व सत्त्व विहीन हो जाए, तब–तब नागरिकों को आगे आकर उसे सत्ता से हटा देना चाहिए। महात्मा गांधी ने कहा ही है कि आजादी का मतलब कुर्सी पर बैठे दो–चार लोग नहीं होते हैं। सत्ता की ज्यादतियों का प्रतिकार करने की कितनी शक्ति जनता में आती है, वही आजादी को मापने का आधार है। 'करो या मरो' का उनका आह्वान 1942 मात्र के लिए नहीं था; लोकतंत्र की जड़ खोदने वाली हर ताकत के सामने हमारा यही संकल्प होना चाहिए। यही गांधी का नमक है जिसका हक हमें अदा करना है।

लोकतंत्र की लड़ाई में हर मोर्चा लड़ाई का मोर्चा बन जाता है; हर नागरिक लड़ाई का सिपाही बन जाता है। इसलिए अजमेर सम्मेलन आह्वान करता है कि अब से देश में जब भी, जहां भी, जो भी चुनाव आएगा, हम सांप्रदायिक ताकतों व उनके गठबंधनों को हराने में वहां अपनी पूरी ताकत लगाएंगे। हम यह जरूर चाहते हैं कि विपक्ष अपना मजबूत लोकतांत्रिक चेहरा लेकर जनता के बीच जाए। लेकिन हम यह भी साफ घोषित करते हैं कि सत्ता में कौन रहे, इससे कहीं ज्यादा आज इस बात का महत्व है कि सत्ता में कौन न रहे। देश के संविधान में, देश के लोकतंत्र में, देश के तिरंगे में, देश की संवैधानिक संस्थाओं में, देश के राष्ट्र–गान में, देश के राष्ट्रपिता में जिस सरकार की अविचल आस्था नहीं है, उसके हाथ में देश की बागडोर रहे, यह न शुभ है, न वांछनीय। इसलिए हमें हर राज्य में, हर मोर्चे पर इन ताकतों को मुंहतोड़ जवाब देना है ताकि 2024 के अंतिम मोर्चे पर हम इन्हें अंतिम तौर पर विदा कर सकें। 'करो या मरो' के संकल्प का आज यही मतलब है।

यह सम्मेलन उन सबको भी सावधान करता है जो आज की सरकार का राजनीतिक विकल्प बनना चाहते हैं। आप सब यह न भूलें कि भारत के संविधान के प्रति निष्ठा तथा भारत की जनता के साथ लोकतांत्रिक व्यवहार ही वह कसौटी है जिसके आधार पर हम आपका समर्थन व सहयोग करते हैं। इस कसौटी पर आप कभी न कमजोर पड़ें, न दिखें, यह बुनियादी बात है। यही आपको हमारे समर्थन का एकमात्र आधार है।

यह प्रस्ताव हम इस विश्वास के साथ पारित कर रहे हैं कि देशभर के गांधी–जन इसे सारे देश में प्रचारित व प्रसारित करेंगे तथा इस दिशा में सक्रियता बनाए रखने का काम करेंगे।

25–26 फरवरी 2024 को राजस्थान के अजमेर में आयोजित गांधी–जन सम्मेलन में पारित प्रस्ताव।

बापू की पौत्री
उषा हरीश गोकानी नहीं रहीं

गांधी स्मारक निधि, मुम्बई की पूर्व अध्यक्षा, वयोवृद्ध गांधीवादी **उषा हरीश गोकानी** का **20 मार्च, 2023** को मुंबई में निधन हो गया। लगभग **90** वर्ष की गोकानी वृद्धावस्था संबंधी बीमारियों से पीड़ित थीं।

महात्मा गांधी के तीसरे पुत्र रामदास गांधी की पुत्री उषा गोकानी आजीवन गांधीवादी मूल्यों में रची–बसी रहीं। वह अंतिम सांस तक कई गांधीवादी संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़ी रहीं।

दिवंगत आत्मा को हमारी हृदय से श्रद्धांजलि और शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना! – सं.

सत्ता के साथी, पूंजी के महाप्रभु

प्रेरणा

दस लाख करोड़ के दो 'चोगे' बने, एक राजा के लिए, दूसरा उसके खास कारोबारी के लिए। सब वाह–वाही में जुट गए। अखबार–दरबार–कारोबार सब जगह एक ही बात – वाह, क्या 'चोगे' बने हैं ! पहले कारोबारी 'चोगा' पहनकर निकला। अभी थोड़ी दूर ही चला था कि कोई चिल्लाया : 'अरे ये तो नंगा है!! 'चोगा' तो है ही नहीं।' राजा ने भी सारी चिल्ल–पौं सुनी; और सुनकर अनसुनी कर दी। वैसा एक 'चोगा' राजा के पास भी तो था। राजा ने सोचा, दस लाख करोड़ का 'चोगा' किसी ऐरे–गैरे को थोड़े न दिखाई देगा। बेशकीमती चीजें देखने के लिए बेशकीमती नजर भी तो चाहिए।

दो–चार दिन बाद राजा का दस लाख करोड़ का 'चोगा' निकाला गया। सब दंग, सब हैरान!! तालियों की गड़गड़ाहट से दरबार गूंज उठा। अखबार–दरबार–कारोबार सब पर 'चोगे' का जादू सर चढ़कर बोलने लगा। सब कहने लगे : क्या 'चोगा' है। ऐसा करामाती 'चोगा' कि प्रजा की सारी परेशानी भुला दे; स्वर्ग की सैर करा दे। लेकिन बात फैलनी ही थी, फैली कि राजा का दस लाख करोड़ का 'चोगा' भी छलावा ही है। पर कौन कहे कि राजा नंगा है।

आपको लग रहा होगा कि मैं वही पुरानी कहानी फिर से आपको सुना रही हूं, लेकिन यह कहानी नहीं है। पिछले दिनों अडानी के खिलाफ 'हिंडनबर्ग रिसर्च' नाम की एक अमेरिकन कम्पनी ने रिपोर्ट जारी की है। लिखा है कि अडानी का पूरा कारोबार दुनिया की सबसे बड़ी ठगी है। 'हिंडनबर्ग' कंपनी खोजबीन के आधार पर ऐसी कंपनियों पर निशाना साधती है जिनके कारोबार उसे फर्ज़ी लगते हैं। शेयर बाजार में फर्ज़ी लगने वाली कंपनी के शेयर ऊंचे दाम पर बेच देती है, फिर पूरे प्रमाण और तथ्यों के साथ अपनी रिपोर्ट सार्वजनिक करती है। इससे बाजार में अफरा–तफरी मच जाती है और उस कंपनी के शेयर गिर जाते हैं। गिरे हुए शेयरों को कौड़ियों के दाम खरीद कर वे लोग मुनाफा वसूली कर लेते हैं। यहां यह बताती चलूं कि शेयर बाजार में ऐसा करना गैर–कानूनी नहीं है।

अडानी के खिलाफ 'हिंडनबर्ग' कम्पनी ने रिपोर्ट तब जारी की जब वे बाजार में अपना 20,000 करोड़ का 'एफपीओ' (फॉलो ऑन पब्लिक ऑफर', एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा पहले से ही एक्सचेंज में सूचीबद्ध कंपनी निवेशकों या मौजूदा शेयरधारकों को नए शेयर जारी करती है।) ले आए थे। अडानी ने पहले से ही बैंक, 'जीवन बीमा' (एलआईसी) आदि से दो लाख करोड़ रुपए से ऊपर का कर्ज उठा रखा है। दुनिया भर के धनपति व संस्थान अडानी जैसों को ऐसे बड़े–बड़े कर्ज इसलिए देते रहे हैं कि उसने दस लाख करोड़ का 'चोगा' पहन रखा है।

'हिंडनबर्ग' ने कह दिया : कारोबारी नंगा है! उसके कहने भर की देर थी अडानी के सारे शेयर बाजार में गिरने लगे। जब यह लेख लिखा जा रहा था, छह दिनों में दस लाख करोड़ की चपत अडानी के नाम पर लग चुकी थी। इसके आलावा 'एलआईसी', उन बैकों के शेयर जिन्होंने अडानी को कर्ज दे रखा है, म्यूचुअल–फंड आदि के नुकसान का अंदाजा अभी लगाया जा रहा है। एक निजी अध्ययन कहता है कि भारतीय संस्थानों का एक या दूसरे रूप में, कुल साढ़े आठ लाख करोड़ का निवेश अडानी कम्पनियों में है। उसका 50 प्रतिशत भी जोड़ें तो लगभग 4 लाख करोड़ का नुकसान। लेकिन इस नुकसान की बात पर फिर आती हूं।

हमारी वित्तमंत्री ने भी दस लाख करोड़ का एक 'चोगा' बजट में पेश किया। उन्होंने कहा कि सरकार ने पूंजीगत निवेश, जिसे 'कैपिटल–एक्स्पेंडिचर' भी कहते हैं, बढ़ाकर 10 लाख करोड़ रुपयों का कर दिया है। पिछले साल की तुलना में 33 प्रतिशत ज्यादा। फिर से अखबार–दरबार–कारोबार सब गदगद!! किसी ने भूले–भटके भी नहीं पूछा : "मैडम, रोजगार का क्या ? या 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी' (मनरेगा) का पैसा क्यों घटा ? महंगाई से मर रहे गरीबों का सवाल भी किसी ने नहीं पूछा। कोई यह भी नहीं पूछ पाया कि इस साल भी आप जो 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज देने जा रहे हैं, उसका खर्च पिछले साल से कम कैसे हो गया ?

आखिर दस लाख करोड़ का 'चोगा' बना कहां से ? सरकार तो बता रही है कि आनेवाले साल में खर्च पर काबू करेंगे, क्योंकि कमाई बढ़ने के आसार इस साल भी कम ही हैं। जब कुल खर्च पर काबू किया जा रहा है तो जाहिर है, खर्च की कटौती होगी। यह कटौती कहां हो रही है ? इस 'चोगे' की सबसे बड़ी कीमत चुका रही है सारी सरकारी कंपनियां ! उन सबका 'कैपिटल–एक्स्पेंडिचर' खत्म कर उसे दूसरी तरफ मोड़ दिया गया है। अब इन कंपनियों का क्या होगा ? सरकार उन्हें बेचने पर मजबूर हो जाएगी। 'मनरेगा' पर खर्च पिछले साल के मुकाबले 33 प्रतिशत कम होगा। 'खाद्यान्न–सब्सिडी' में 31 प्रतिशत की, खाद पर 22 प्रतिशत की, पेट्रोल पर 75 प्रतिशत की कटौती हुई है। कुल मिलाकर लगभग 5 लाख करोड़ रुपए की सब्सिडी में 30 प्रतिशत की कटौती हो रही है। कुल 'सकल घरेलू उत्पाद' (जीडीपी) में स्वास्थ्य–बजट का हिस्सा पिछले साल में घट गया है।

लब्बो–लुआब यह कि कई तरह के खर्चों में कटौती करके बनाया गया है 'कैपिटल–एक्स्पेंडिचर' का दस लाख करोड़ रुपयों का यह 'चोगा' । कहां–कहां से कम किया गया है पैसा, यह अपने–आप में एक स्वतंत्र, लंबे लेख का विषय है। मोटा–मोटी कहूं तो गरीबों को सम्मानजनक रोजगार मिले इसकी कोई सोच नहीं है। लोगों को या तो बाजार के भरोसे छोड़ दिया गया है या फिर दो–कौड़ी की मुफ्त रेवड़ी पकड़ा दी गई है। और बाजार भी कैसा – हाथ से काम करने वाले विश्वकर्मा को 'थ्री–डी प्रिंटर' से सीधी स्पर्धा में उतार दिया गया है। पैसा आ कहां से रहा है ? अरे 'वस्तु एवं सेवा कर' (जीएसटी) के सरकारी आंकड़े नहीं देखे आपने ? भर–भर कर पैसा आ रहा है। अब तो आटा, दही, छांछ तक पर 'जीएसटी' लग गया है।

दो ही सवाल पूछती हूं : जब अडानी के शेयर गिरे तो 10 से 4 लाख करोड़ रुपयों से ज्यादा नुकसान हुआ। यह नुकसान किसका हुआ ? अडानी का ? गंवाने के लिए अडानी के पास इतना पैसा आया कहां से ? 2020 में अडानी की एक कंपनी, 'एंटरप्राइज' का शेयर 125 रुपयों का था जो 2022 में 4100 रुपयों का हो गया। 'हिंडनबर्ग रिपोर्ट' के बाद वह गिरकर 1017 रुपयों का हो गया। अब आप देखिए कि शेयर ऊपर गया तो पैसा कहां गया ? और शेयर नीचे गया तो पैसा कहां गया ? जवाब है : अपनी बेहिसाब अमीरी को गिरवी रख उन्होंने लाखों–करोड़ों रुपयों के कर्ज देशी–विदेशी बाजार से उठाया था। दाम नीचे गिरा तो उन सबका नुकसान हुआ जिन्होंने यह कर्ज अडानी को दिया था। बैंक, 'एलआईसी' म्यूच्युअल–फंड आदि में पैसा किसका है ? अभी तक ऐसा तो नहीं हुआ है कि अडानी साहब को नोट छापने के लिए निजी प्रेस लगाने की अनुमति मिल गई हो। तो पैसा तो हमारा ही है जो उद्योगपतियों का कहकर, उनकी जेब में डाला जा रहा है।

दूसरा सवाल। अडानी कम्पनी 1988 में बनी। भारतीय जनता पार्टी' की गुजरात सरकार 1995 में बनी। 1996 में कंपनी ने पहली बार जनता से शेयर बाजार में आकर पैसा लिया। इसके बाद न अडानी समूह ने कभी पीछे मुड़कर देखा, न गुजरात की बीजेपी सरकार ने। यही है गुजरात मॉडल। दुनिया में इसे 'क्रोनी कैपिटलिज्म (यारान पूंजीवाद) कहते हैं। वो कहते हैं न कि प्लेग का चूहा फूंक मारकर काटता है तो सरकारी चूहा भी ऐसा ही करता है। जिसे काटता है, उसे पता भी नहीं चलता है। फिर कोई कैसे कहे कि भाई, 'चोगा' जितना भी महंगा हो, हो तो नंगे ही, और देश को भी नंगा करते जा रहे हो ? **(सप्रेस)**

जाग तुझको दूर जाना

बांध लेंगे क्या तुझे यह
मोम के बंधन सजीले,
पंथ की बाधा बनेंगे
तितलियों के पर रंगीले,
विश्व का क्रंदन भुला देगी
मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे
यह फूल दे दल ओस गीले,
तू न अपनी छाँह को
अपने लिये कारा बनाना।
जाग तुझको दूर जाना।।

– महादेवी वर्मा

मंत्री की कलम से

बलिदान दिवस : 30 जनवरी

गांधी पुण्यतिथि पर देश भर में कार्यक्रम आयोजित किये गये। केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि की सलाह अनुसार सभी केन्द्रों, राज्य इकाइयों द्वारा 30 जनवरी से 12 फरवरी तक सतत् कार्यक्रम जैसे सर्वधर्म प्रार्थना सभा, विचार–गोष्ठी, युवा संवाद, स्कूल–कॉलेज में कार्यक्रम, रैली, आदि का आयोजन किया गया। केवल 30 जनवरी के दिन 300 से अधिक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजन की सूचना है। कार्यक्रमों में बड़ी तादाद में आम जनता ने भी भागीदारी की। केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि द्वारा आवश्यक सहायता आदि की गयी है। समाज के साथ जुड़ने और गांधी–विचार के प्रचार–प्रसार के लिये इस वर्ष का प्रयास सफल रहा है।

युवा शिविर :

गांधी भवन–भोपाल में 19 से 22 फरवरी तक युवा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में उ. प्र., म. प्र., महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, बिहार, पंजाब, झारखण्ड आदि राज्यों के विश्वविद्यालयों के 150 विद्यार्थी शामिल रहे। चार दिवसीय शिविर में गांधी दर्शन के प्रबोधन के साथ श्रमदान, गीत, रैली, चौपाल, सर्वधर्म प्रार्थना, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि दिन–चर्या में शामिल रहे। शिविर में वरिष्ठ गांधीजन एवं पत्रकार लज्जाशंकर हरदेनिया, भास्कर राव रोकडे, चिन्मय मिश्र, विजय दत्त श्रीधर, ध्रुव शुक्ल, राकेश दीवान, अरुण उनायक, महेश सक्सेना, पीयूष बबेले, राकेश कुमार पालिवाल, संजय सिंह, दयाराम नामदेव, जागृति राही, दमयन्ती पाणी, संजय राय, कैलाश चंद्र पंथ, शिवकांत त्रिपाठी, बादल सरोज आदि ने युवाओं का मार्ग–दर्शन किया। गांधी दर्शन के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक पहलुओं पर प्रबोधन के साथ समसामयिक स्थिति पर चर्चा एवं विश्लेषण किया गया। शिविर में विद्यार्थियों के साथ संवाद कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। शिविर के मूल्यांकन में शिविरार्थियों ने कहा कि वे यहां गांधीजी के बारे में फैलाये गये भ्रमों से अवगत हुए हैं और इस साजिश के शिकार होने से बच गए हैं। भारत के निर्माण में सर्वोदय आंदोलन की भूमिका, आजादी के बाद में रचनात्मक कार्यक्रम, युवा संगठन के महत्व, बेरोजगारी और युवा, लोकतंत्र की वर्तमान दशा और दिशा तथा उग्र राष्ट्रवाद से होने वाले नुकसान जैसे विषयों पर विद्यार्थियों ने जमकर भागीदारी की। युवाओं को गांधी–विचार से जोड़ने तथा गांधी–विचार के प्रचार–प्रसार के लिए शिविर एक सहज माध्यम है और इस तरह के आयोजन देशभर में सतत होने चाहिए।

शिविर संचालन की जिम्मेदारी युवा साथी अंकित मिश्रा ने निभायी। शिविर आयोजन में संतोष कुमार द्विवेदी, शिवाशीष भाई, विजयानंद तिवारी एवं गांधी भवन न्यास के कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। शिविर आयोजन म. प्र. गांधी स्मारक निधि, गांधी भवन न्यास, भोपाल, राष्ट्रीय युवा संगठन, म. प्र. सर्वोदय मंडल के द्वारा किया गया।

अजमेर गांधीजन सम्मेलन (25–26 फरवरी) :

राजस्थान सरकार द्वारा नवगठित अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय गांधीजन सम्मेलन की तैयारी में गांधी स्मारक निधि द्वारा सहायता की गई। गांधी स्मारक निधि के कई केन्द्रों के पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं सहित देशभर के 200 गांधीजनों ने उपस्थिति दर्ज कराई। अजमेर में गांधी अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन भी इस अवसर पर किया गया। देश की वर्तमान आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर चिंतित गांधीजनों द्वारा गहराई से चिंतन–मंथन किया गया। निरंतर बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, राजनीतिक विभाजनकारी नफरत बढ़ाने वाली नीतियां, विग्रह और हिंसा का तांडव चुनौतियों के रूप में उग्र से उग्रतर होती जा रही हैं। इस स्थिति में गांधीजन सत्य–अहिंसा की मूल्यनिष्ठा के साथ कैसे इन चुनौतियों का सामना करें, इस पर विचार किया गया। वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु गांधीवादी प्रयासों पर जोर दिया गया। कार्यक्रम में निधि के अध्यक्ष रामचन्द्र राही, ट्रस्टी कुमार प्रशांत, ए. अण्णामलाई, डॉ. विश्वजीत, आशा बोथरा और मंत्री संजय सिंह उपस्थित रहे।

समापन कार्यक्रम में राजस्थान के विधानसभा अध्यक्ष सी. पी. जोशी ने उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर 'अजमेर प्रस्ताव' के नाम से एक प्रस्ताव भी पारित किया गया।

– संजय सिंह

सच स्वीकारने से बदल गयी जिन्दगी

बसंत कुमार

अक्सर यह सवाल पूछा जाता है कि क्या महात्मा गांधी आज भी प्रासंगिक हैं ? उनके मार्ग पर चलना आज भी मुमकिन है ? गूगल पर इसको लेकर सैकड़ों सवाल और तरह–तरह के जवाब उपलब्ध हैं।

आज महात्मा गांधी के बारे में मनगढ़ंत, अधूरी जानकारियां और झूठी खबरें आईटी सेल के माध्यम से फैलाई जा रही हैं। देश में एक बड़ा तबका गांधी को 'विलेन' मान बैठा है।

गुजरात के अहमदाबाद में रहने वाले 32 वर्षीय मिलन ठक्कर ऐसे ही नौजवानों में से थे। वे महात्मा गांधी के बारे में सोशल मीडिया और अपने आस–पास के कुछ लोगों से जानते थे। वे गांधी को पसंद नहीं करते थे। ठक्कर बताते हैं, "मैं बापू से नफरत करता था। उनकी तस्वीरें देखकर उन्हें गाली तक दे देता था। मैं नफरत क्यों करता था, इसका ठीक–ठीक जवाब यह है कि मैं कभी उनके पास गया ही नहीं था। आस–पास के लोगों से सुना था कि उन्होंने पाकिस्तान को 55 लाख रुपए दिलवा दिए। सरदार पटेल को प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया। इन सब कारणों से वे मुझे पसंद नहीं थे।"

जेल में गांधी से मुलाकात

एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जन्मे मिलन अपने परिवार की आर्थिक स्थिति से परेशान थे। 10वीं तक की पढ़ाई करने के बाद मिलन ने पढ़ाई छोड़कर काम करना शुरू कर दिया। मिलन बताते हैं, "मेरी महात्वाकांक्षा इतनी ज्यादा थी कि मैं कहीं रुककर काम नहीं कर पाता था। 'बिजनेस' के लिए मेरे पास पैसे भी नहीं थे।"

मिलन ने इसके लिए शॉर्टकट रास्ता अपनाया। मिलन बताते हैं, "परिवार की स्थिति ठीक नहीं थी। अमीर बनने की चाहत थी। गूगल और यू–ट्यूब से नकली नोट बनाना सीखा। यह 2014 की बात है। 100–100 के 41 सौ नोट छापे थे। उनमें से चार ही चलाए थे। तब तक पुलिस ने पकड़ लिया। 21 जून, 2014 को मैं जेल गया। नोटबंदी के बाद 16 दिसंबर, 2016 को सेशन कोर्ट ने 10 साल की सजा सुनाई। मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई। जिन मां–बाप को बदहाली से मैं निकालना चाहता था, उन्हें और फंसा दिया था।

"जब तक मैं अंडर ट्रायल कैदी था तब तक मुझे जेल में कोई काम नहीं मिला। सजा होने के बाद मुझे काम देने लगे। मुझे जेल के कानून विभाग में काम करने का मौका मिला। वहां मैं थोड़ा बहुत जाना–समझा। तब घर में पैसों की जरूरत और बढ़ गई थी। उसी समय पता चला कि जेल में गुजराती किताबों को रिकॉर्ड करने का काम भी मिलता है। यह दिव्यांग बच्चों के लिए होता था।

"जेल में मेरे एक साथी ने कहा कि तुम्हारी आवाज़ अच्छी है तुम चले जाओ। उसमें हरेक घंटे के 60 रुपए मिल रहे हैं। यहीं पहली बार मैं महात्मा गांधी से मिला। आर. के. प्रभु और यू. आर. राव की किताब **"द माइंड ऑफ महात्मा गांधी"** का गुजराती अनुवाद **"महात्मा गांधी ना विचारो"** को मुझे रिकॉर्ड करना था।"

मिलन कहते हैं, "रिकॉर्डिंग तो मैं पैसों के लिए कर रहा था। महात्मा गांधी मुझे पसंद नहीं थे, ये मैं आपको पहले ही बता चुका हूं। लेकिन इस किताब में कुछ ऐसा था जो मुझे बदल रहा था। इसे पढ़ते हुए मैंने जाना कि सच बोलना कितना जरूरी है।

"जब मैं यह सब रिकॉर्ड कर रहा था तब लगभग साढ़े चार साल जेल की सजा काट चुका था। गांधी ने मुझे बदल दिया था। मैंने सच बोलने का फैसला लिया। अब तक मैं अपनी लड़ाई खुद को बेगुनाह बताते हुए लड़ रहा था, लेकिन इस बार मैंने सच बोला। मैंने हाईकोर्ट में सजा कम कराने के लिए 'एफिडेविट' दायर किया, जिसमें मैंने बताया कि फेक करेंसी मैंने अपने होशोहवास में बनाई। मैं उससे पैसे कमाकर अमीर बनना चाहता था, मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है। ऐसे में मेरी सजा कम की जाए। एक बात मैं जानता था कि हाईकोर्ट मेरी सजा कम नहीं करेगा तो बढ़ाएगा भी नहीं।"

मिलन का मामला हाईकोर्ट के जज पी. पी. भट्ट के पास गया। मिलन को जिसकी उम्मीद नहीं थी वही हुआ। जज ने उनकी सजा पांच साल कर दी। वो बताते हैं, "मैंने सच बोला था। मेरे वकील ने काफी समझाया था, लेकिन मुझे सच बोलना था। जब मेरी सजा कम हुई, तो मुझे सच

प्रकाशन तिथि 28/03/2023
Delhi Postal Regd. No. DL (C)-05/1423/2022-2024
R.No.21841/1971 Posted at L.P.C.- Delhi. R.M.S.Delhi-6 on 1st, 2nd April, 2023

बापू की डिग्री को लेकर सिन्हा का दावा गलत : तुषार गांधी

महात्मा गांधी के परपोते तुषार गांधी ने जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के इस दावे को खारिज किया है कि राष्ट्रपिता के पास किसी भी विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं थी। उन्होंने ट्वीट किया, "एम.के. गांधी ने दो जगह से 10वीं की परीक्षा पास की। उन्होंने अल्फ्रेड हाई स्कूल राजकोट से 10वीं की। उन्होंने लंदन में 10वीं के समकक्ष ब्रिटिश मैट्रिकुलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से संबद्ध विधि महाविद्यालय 'इनर टेंपल' से कानून की डिग्री के लिए पढ़ाई की और परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके अलावा उन्होंने लातिन और फ्रेंच में दो डिप्लोमा प्राप्त किए।"

सिन्हा ने 23 मार्च, 2023 को आईटीएम, ग्वालियर में डॉ. राम मनोहर लोहिया स्मृति व्याख्यान में भाषण देते हुए महात्मा गांधी की शैक्षिक योग्यता पर बात की थी। उन्होंने कहा था, "क्या आप जानते हैं कि उनके पास एक भी विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं थी। हममें से कई लोग सोचते हैं कि महात्मा गांधी के पास कानून की डिग्री थी। नहीं, ऐसा नहीं था। उनके पास केवल हाई स्कूल का एक डिप्लोमा था। उन्होंने वकालत करने के लिए अर्हता प्राप्त की थी और उनके पास कानून की डिग्री नहीं थी।"

गांधी ने ट्वीट किया, "मैंने बापू की आत्मकथा की एक प्रति राजभवन, जम्मू को इस उम्मीद के साथ भेजी है कि यदि उपराज्यपाल इसे पढ़ सकें तो इससे उनकी स्वयं की जानकारी बढ़ेगी।"

➡की ताकत का अंदाज लगा। मैं कुछ ही महीने बाद जेल से बाहर आ गया।"

गांधी ने मिलन को पूरी तरह बदल दिया था। कुछ महीने बाद जेल से वो रिहा होने वाले थे। उसी समय गुजरात के जाने–माने पत्रकार प्रशांत दयाल जेल में पत्रकारिता की वर्कशॉप लेने आए।

मिलन कहते हैं, "मैं पत्रकारिता के बारे में ज्यादा जानता नहीं था। इसे मैं करियर के रूप में देख नहीं रहा था तो वर्कशॉप में जाना नहीं चाहता था। जेल में मेरे एक साथी थे भंवर लाल। वे 13–14 साल से जेल में बंद थे। उन्होंने मुझे इसमें शामिल होने के लिए कहा तो मैंने मना कर दिया। हालांकि जब वर्कशॉप के लिए नामों की घोषणा हुई तो उसमें मेरा नाम भी था। दरअसल भंवर लाल ने चुपके से लिखवा दिया था। तब उन पर गुस्सा आया था। पर मुझे कहां मालूम था कि आगे चलकर यही मेरा करियर बनेगा।"

जाने–माने क्राइम रिपोर्टर प्रशांत दयाल कहते हैं, "मैं नवजीन ट्रस्ट (जिसका निर्माण महात्मा गांधी ने साल 1919 में किया था) की तरफ से जेल में कैदियों को पढ़ाने जाता था। वहां मेरी मुलाकात मिलन से हुई थी। हम जेल में किसी भी कैदी से उसका अतीत या क्राइम नहीं पूछते, क्योंकि हमें उनके वर्तमान और भविष्य पर ध्यान देना होता है। मिलन जानने–समझने को लेकर उत्सुक युवक लगा। उसने अपनी महात्मा गांधी से जुड़ाव की कहानी बताई थी।"

जेल से लौटने के बाद मिलन के लिए सब कुछ आसान नहीं था। उन्हें नौकरी नहीं मिल रही थी। तब वे प्रशांत दयाल के पास आए। प्रशांत दयाल ने नवजीव ट्रस्ट में बात कर 'प्रूफ रीडर' की नौकरी पर रखवा दिया। कुछ समय बाद दयाल ने जब 'नवजीवन न्यूज़' शुरू किया तो इससे भी मिलन जुड़ गए। यहां वे प्रूफ रीडिंग के साथ–साथ ख़बरें भी लिखते हैं।

मिलन बताते हैं, "गुजराती भाषा की मेरी समझ पहले से अच्छी है। उस 'वर्कशॉप के बाद मेरी रुचि मीडिया में बढ़ गई। मैं प्रूफ रीडर का काम करता हूं। रिपोर्टिंग नहीं कर पाता हूं। कभी –कभी पॉजिटिव रिपोर्ट लिख लेता हूं।"

जिस जेल में मिलन ने पांच साल तक सजा काटी आज उसी में वे सप्ताह में तीन दिन प्रूफ रीडिंग पढ़ाने जाते हैं। मिलन का मानना है कि यह सब मुमकिन नहीं हो पाता, अगर गांधी के विचारों से मेरा परिचय नहीं हुआ होता।

(मुम्बई सर्वोदय मण्डल के सौजन्य से)

स्वामी गांधी स्मारक निधि के लिए राजघाट, नई दिल्ली–110002 से संजय सिंह, गांधी स्मारक निधि द्वारा प्रकाशित व मुद्रित
जैन ऑफसेट प्रिंटर्स, 198/2–1, फारचुन टावर, रमेश मार्केट, नई दिल्ली–110065
सम्पादक – रामचन्द्र राही